डॉ.पी.एस्.पाटील
एम.ए.पीएच.डी.
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,

तथा

अध्यक्ष,हिन्दी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघुशोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

तिथि : 24/11/95

कोल्हापुर :

(डॉ.पी.एस्.पाटील)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

डॉ.पी.एस्.पाटील
एम.ए.पीएच.डी.
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,

तथा

अध्यक्ष,हिन्दी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री.रामचन्द्र मारूती लोंढे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल उपाधि के लिए प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध "देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक एवं पुरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघुशोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है। श्री.रामचन्द्र मारूती लोंढे के प्रस्तुत लघुशोध कार्य के बारे में मैं पुरी तरह संतुष्ट हूँ।

शोध निर्देशक

तिथि :- 24/11/95

कोल्हापुर :-

(डॉ.पी.एस्.पाटील)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. उपाधि के हेतु प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध-छात्र

तिथि : 24|11|95 (श्री.लोंढे रामचन्द्र मारूती)

कोल्हापुर :

* अनुक्रमणिका *

: अनुक्रमणिका :

भूमिका :

१. **प्रथम अध्याय** : "देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" ... (१ से १८ तक)

१:१. जीवन परिचय।

१:२. व्यक्तित्व।

१:३. कृतित्व।

१:१. जीवन परिचय :-

१:१:१. जन्म तथा आरम्भिक जीवन।

१:१:२. शिक्षा तथा पुरस्कार।

१:१:३. विवाह संतान।

१:१:४. अर्थोपार्जन।

१:१:५. साहित्य सृजन।

निष्कर्ष :-

१:२. व्यक्तित्व :-

१:२:१. देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व का बाह्य पक्ष।

१:२:२. वेशभूषा।

१:२:३. आहार।

१:२:४. सरलता तथा भावुकता।

१:२:५. स्वाभिमानी और ईमानदार।

१:२:६. स्पष्टवादी, हँसमुख और मुँहफट।

१:२:७. निर्णयक्षम और कार्यभार सम्भालनेवाला।

१:२:८. व्यवस्था प्रिय।

१:२:९. कार्यक्षम और संघर्षशील।

१:२:१०. सच्चा मित्र और जिन्दादिल दोस्त।

निष्कर्ष :-

१:३. कृतित्व :-

१:३:१. कविता संग्रह।

१:३:२. एकांकी।

१:३:३. कहानी।

१:३:४. निबंध।

१:३:५. बाल साहित्य।

१:३:६. शोध एवं समीक्षा।

१:३:७. संपादन कार्य।

१:३:८. उपन्यास।

निष्कर्ष :-

२. द्वितीय अध्याय :- " "जनगाथा" की कथावस्तुका अनुशीलन" (१९ से ४३ तक)

२:१. कथावस्तु :-

२:१:१. मुख्य कथा। आधिकारिक कथा।

२:१:२. प्रासंगिक कथा।

२:२. "जनगाथा "की समीक्षा"

निष्कर्ष :-

३. तृतीय अध्याय :- " "जनगाथा" के पात्र तथा चरित्र-चित्रण (४४ से ८३ तक)

३:१. उपन्यासों में चरित्रों का महत्व।

३:२. चरित्र-चित्रण का स्वरूप।

३:३. "जनगाथा" उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण :-

३:३:१. <u>शकुन</u> :-

३:३:१:१. बचपन।

३:३:१:२. संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व।

३:३:१:३. संस्कारशील।

३:३:१:४. सेवा वृत्ति।

३:३:१:५. आदर्श अध्यापिका।

३:३:१:६. तर्कनिपुण।

३:३:१:७. आत्मपीड़ित।

३:३:१:८. सपने बुननेवाली।

३:३:१:९. अकेलेपन।

३:३:१:१०. अन्तर्द्वन्द्व।

३:३:२. <u>शिवनाथ</u> (लेखक)

३:३:२:१. प्रतिभा संपन्न लेखक।

३:३:२:२. मध्यवर्गीय पात्र।

३:३:२:३. आदर्श अध्यापक।

३:३:२:४. आत्मकेन्द्रित अध्यापक।

३:३:२:५. ईमानदार।

३:३:२:६. कुछ आदतों का मारा।

३:३:३. <u>जोशी</u> (पत्रकार)

३:३:३:१ प्रतिभा संपन्न पत्रकार।

३:३:३:२. मुँहफट।

३:३:३:३. शराबी।

३:३:३:४. राजनीतिक भ्रष्टाचार का विरोधी।

३:३:३:५. जीवन दृष्टि।

३:३:३:६. सच्चा दोस्त।

३:३:३:७. सस्ते साहित्य का विरोधी।

३:३:३:८. मध्यवर्ग का प्रतिनिधि तथा सामान्य जनता का पक्षधर।

३:४. "जनगाथा" के गौण पात्रों का चरित्र चित्रण :-

३:४:१. शंकर भैयुया।

३:४:२. मोहिन्दर।

३:४:३. शोभा।

३:४:४. सलमा।

३:४:५. मानुषी।

३:४:६. मिसेज पूरी।

३:४:७. शुभांगी गडकरी।

निष्कर्ष :-

४. चतुर्थ अध्याय :- " "जनगाथा" में चित्रित समसयाएँ" (८४ से १४९ तक)

४:१. समस्याओं का स्वरूप।

४:१:१. समस्याओं का अर्थ।

४:२. समस्याओं के प्रकार :-

४:२:१. सामाजिक समस्याएँ।

४:२:२. राजनीतिक समस्याएँ।

४:२:३. आर्थिक समस्याएँ।

४:२:४. शिक्षा समस्याएँ।

४:२:५. साहित्यिक समस्याएँ।

४:२:६. महानगरीय समस्याएँ।

४:२:१. **सामाजिक समस्याएँ :-**

४:२:१:१. अनमेल विवाह समस्या।

४:२:१:२. विधवा समस्या।

४:२:१:३. सेक्स समस्या।

४:२:१:४. वेश्यावृत्ति की समस्या।

४:२:१:५. रिश्तों में ढ़िलापन।

४:२:१:६. पानी की समस्या।

४:२:२. **राजनीतिक समस्याएँ :-**

४:२:२:१. साहित्य और राजनीति।

४:२:२:२. भ्रष्टाचार और राजनेता।

४:२:२:२:१. कांग्रेसी नेता।

४:२:२:२:२. साम्यवादी नेता।

४:२:२:३. भ्रष्टाचार और पुलिस।

४:२:२:४. व्यवस्था विरोधी।

४:२:२:५. जनतन्त्र, अभिव्यक्ति की आजादी और प्रेस।

४:२:२:६. चुनाव।

:२:२:७. भाषा समस्या।

४:२:३. **आर्थिक समस्याएँ :-**

४:२:३:१. मँहगाई की समस्या।

४:२:३:२. गरीबी की समस्या।

४:२:३:३. आर्थिक विषमता।

४:२:४. **शिक्षा समस्याएँ :-**

४:२:४:१. अध्यापकों की कामचोर वृत्ति।

४:२:४:२. शिक्षा और अनैतिकता।

४:२:४:३. विश्वविद्यालय और भ्रष्टाचार

४:२:५. **साहित्यिक समस्याएँ :-**

४:२:५:१. बाजारू साहित्य का निर्माण।

४:२:५:२. अनुभूतिपूर्ण साहित्य का अभाव।

४:२:६. **महानगरीय समस्याएँ :-**

४:२:६:१. मकान की समस्या।

४:२:६:२. असुरक्षितता तथा गुण्डा गर्दी की समस्या।

४:२:६:३. विक्षिप्त मनोदशा।

४:२:६:४. अकेलेपन की समस्या।

निष्कर्ष :-

उपसंहार। (१५० से १५७ तक)

संदर्भ ग्रंथ सूची। (१५८ से १६० तक)

.....